तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी   वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ   प्रयोजन - भावना

अब तक की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या	१	१
निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण	२	१
निश्चय सम्यग्दर्शन के भेद	३	१
तत्त्वों के नाम	४	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीत	५	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि मुख्य एवं अमुख्य उपाय	६-८	३

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --	९	१
कौन से ज्ञान प्रमाण है ?	१०	१
परोक्ष एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद	११-१२	२
मतिज्ञान के दूसरे नाम	१३	१
मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त -	१४	१
मतिज्ञान के क्रम के भेद तथा उनका स्वरूप	१५-१९	५
श्रुतज्ञान का वर्णन, उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद	२०	१

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ९

अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम् ॥९ ॥

अर्थ - मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान - ये पाँच (ज्ञानम्) ज्ञान हैं।

अध्याय १: सूत्र ९ - अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --

मतिश्रुतावधिमन:पर्ययकेवलानि ज्ञानम्।।९।। - मतिज्ञान की परिभाषा

मतिज्ञान - **पाँच इन्द्रियों और मन के (निमित्त) द्वारा (अपनी शक्ति के अनुसार) जो ज्ञान होता है, उसे मतिज्ञान कहते हैं।**

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम्।।९।। - श्रुतज्ञान की परिभाषा

श्रुतज्ञान - मतिज्ञान के द्वारा जाने हुए पदार्थ को विशेषरूप से जानना, सो श्रुतज्ञान है।

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम्।।९।। - अवधिज्ञान की परिभाषा

अवधिज्ञान - जो द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की मर्यादासहित इन्द्रिय या मन के निमित्त के बिना रूपी पदार्थों को प्रत्यक्ष जानता है, उसे अवधिज्ञान कहते हैं।

अध्याय १: सूत्र ९ - अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --

मतिश्रुतावधिमन:पर्ययकेवलानि ज्ञानम्।।९।। - मन:पर्ययज्ञान की परिभाषा

मनःपर्ययज्ञान – जो द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की मर्यादासहित इन्द्रिय अथवा मन की सहायता के बिना ही दूसरे पुरुष के मन में स्थित रूपी पदार्थों को प्रत्यक्ष जानता है, उसे मनःपर्ययज्ञान कहते हैं।

मतिश्रुतावधिमन:पर्ययकेवलानि ज्ञानम्।।९।। - केवलज्ञान की परिभाषा

केवलज्ञान - समस्त द्रव्य और उनकी सर्व पर्यायों को एक साथ प्रत्यक्ष जाननेवाले ज्ञान को केवलज्ञान कहते हैं।

मतिश्रुतावधिमन:पर्ययकेवलानि ज्ञानम्।।९।। - प्रश्न...उत्तर...

- **प्रश्न।** यहाँ कुमति, कुश्रुत और कुअवधिज्ञान क्यों नहीं लिए?
- **उत्तर।** यह तीनों ज्ञान मिथ्याश्रद्धा सहित है, अत: यह ज्ञान विपरीत है ओर प्रमाण [अर्थात् सम्यग्ज्ञान] नहीं है।

अध्याय १: सूत्र ९ - अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं –

मतिश्रुतावधिमन:पर्ययकेवलानि ज्ञानम्।।९।। - ज्ञानम् शब्द का प्रयोजन

- इस सूत्र में 'ज्ञानम्' शब्द एक वचन का है, वह यह बतलाता है कि ज्ञानगुण एक है और उसकी पर्याय के ये ५ भेद हैं।
- इनमें जब एक प्रकार उपयोगरूप होता है, तब दूसरा प्रकार उपयोगरूप नहीं होता; इसलिए इन पाँच में से एक समय में एक ही ज्ञान का प्रकार उपयोगरूप होता है।

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम्।।९।। - सम्यग्दर्शन ओर सम्यग्ज्ञान

- सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शनपूर्वक होता है।
- सम्यग्दर्शन, कारण और सम्यग्ज्ञान, कार्य है।
- सम्यग्ज्ञान, आत्मा के ज्ञानगुण की शुद्धपर्याय है; यह आत्मा से कोई भिन्न वस्तु नहीं है।

मतिश्रुतावधिमन:पर्ययकेवलानि ज्ञानम्।।९।। - सम्यग्ज्ञान का स्वरूप

"सम्यग्ज्ञानं पुनः स्वार्थव्यवसायात्मकं विंदुः"

(तत्त्वार्थसार पूर्वार्ध, गाथा १८, पृष्ठ १४)

अध्याय १: सूत्र ९ - अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम्।।९।। - सम्यग्ज्ञान का स्वरूप

- अर्थ - जिस ज्ञान में स्व = अपना स्वरूप, अर्थ = विषय, व्यवसाय = यथार्थ निश्चय, ये तीन बात पूरी हों, उसे सम्यग्ज्ञान कहते हैं
- अर्थात् जिस ज्ञान में विषय प्रतिबोध के साथ-साथ स्वस्वरूप प्रतिभासित हो और वह भी यथार्थ हो तो उस ज्ञान को सम्यग्ज्ञान कहते हैं।

अध्याय १: सूत्र ९ - अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम्।।९।। - सूत्र का सिद्धान्त

श्री जिनेन्द्र भगवान द्वारा प्ररूपित ज्ञान के समस्त भेदों को जानकर, परभावों को छोड़कर और निजस्वरूप में स्थिर होकर, जीव जो चैतन्य चमत्कारमात्र है, उसमें प्रवेश करता है - गहरा उतर जाता है, वह पुरुष शीघ्र ही मोक्ष को प्राप्त करता है।

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ९

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --	९	१
कौन से ज्ञान प्रमाण है ?	१०	१
परोक्ष एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद	११-१२	२
मतिज्ञान के दूसरे नाम	१३	१
मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त -	१४	१
मतिज्ञान के क्रम के भेद तथा उनका स्वरूप	१५-१९	५
श्रुतज्ञान का वर्णन , उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद	२०	१

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र १०

कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ॥ १० ॥

अर्थ - [तत्] उपरोक्त पाँचों प्रकार के ज्ञान ही [प्रमाणे] प्रमाण (सच्चे ज्ञान) हैं।

तत्प्रमाणे ।।१०।। - टीका

- नववें सूत्र में कहे हुए पाँचों ज्ञान ही प्रमाण हैं; अन्य कोई ज्ञान प्रमाण नहीं है।
- प्रमाण के दो भेद हैं, प्रत्यक्ष और परोक्ष।

अध्याय १: सूत्र १० - कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - ९ से १२ सूत्र की विषयवस्तु

- प्रमाण [सूत्र ९]
  - परोक्ष [सूत्र १०]
    - मतिज्ञान [सूत्र ११]
    - श्रुतज्ञान [सूत्र ११]
  - प्रत्यक्ष [सूत्र १०]
    - विकल [सूत्र १२]
      - अवधिज्ञान [सूत्र १२]
      - मन:पर्ययज्ञान [सूत्र १२]
    - सकल [सूत्र १२]
      - केवलज्ञान [सूत्र १२]

अध्याय १: सूत्र १० - कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - [प्रमाण] ज्ञान की उत्पत्ति किससे ?

[प्रमाण] ज्ञान की उत्पत्ति किससे ?

- स्व से... ?
- पर से... ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - इन्द्रिय ज्ञान प्रमाण नहीं है...

- यह ध्यान रहे कि इन्द्रियाँ अथवा इन्द्रियों और पदार्थों के सम्बन्ध (सन्निकर्ष), ये कोई प्रमाण नहीं हैं
  - अर्थात् न तो इन्द्रियों से ज्ञान होता है
  - और न इन्द्रियों और पदार्थों के सम्बन्ध से ज्ञान होता है,
- किन्तु उपरोक्त मति आदि ज्ञान, स्व से होते हैं; इसलिए ज्ञान प्रमाण है।

अध्याय १: सूत्र १० - कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - प्रश्न...उत्तर...इन्द्रिय ज्ञान प्रमाण नहीं है...

प्रश्न – इन्द्रियाँ प्रमाण हैं, क्योंकि उनके द्वारा ज्ञान होता है ?

उत्तर – इन्द्रियाँ प्रमाण नहीं है, क्योंकि इन्द्रियाँ जड़ हैं और ज्ञान तो चेतन की पर्याय है, वह जड़ नहीं है; इसलिए आत्मा के द्वारा ही ज्ञान होता है।

(श्री जयधवला पुस्तक भाग १, पृष्ठ ५४-५५)

अध्याय १: सूत्र १० - कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - प्रश्न...उत्तर...ज्ञेयों से ज्ञान नहीं होता...

प्रश्न - यह ठीक है न कि प्रस्तुत ज्ञेय पदार्थ हों तो उससे ज्ञान होता है ?

उत्तर - यह ठीक नहीं है। यदि प्रस्तुत पदार्थ (ज्ञेय) और आत्मा इन दोनों के मिलने से ज्ञान होता तो ज्ञाता और ज्ञेय, इन दोनों को ज्ञान होना चाहिए, किन्तु ऐसा नहीं होता।

(सर्वार्थसिद्धि, पृष्ठ ३३२)

अध्याय १: सूत्र १० - कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - प्रश्न...उत्तर...उपादान - निमित्त व्यवस्था...

- यदि उपादान और निमित्त ये दो होकर एक कार्य करें तो उपादान और निमित्त की स्वतन्त्र सत्ता न रहे।
- उपादान, निमित्त का कुछ नहीं करता और न निमित्त, उपादान का कुछ करता है।
- प्रत्येक पदार्थ स्वतन्त्ररूप से अपने-अपने कारण से अपने लिए उपस्थित होते हैं, ऐसा नियम होने से अपनी योग्यतानुसार निमित्त-उपादान दोनों के कार्य स्वतन्त्र, पृथक्-पृथक् होते हैं।

तत्प्रमाणे ।।१०।। - प्रश्न...उत्तर...उपादान - निमित्त व्यवस्था...

- यदि उपादान और निमित्त ये दोनों मिलकर काम करें तो दोनों उपादान हो जाएँ, अर्थात् दोनों की एक सत्ता हो जाए, किन्तु ऐसा नहीं होता।

अध्याय १: सूत्र १० - कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - प्रश्न...उत्तर...उपादान - निमित्त व्यवस्था...

- इस सम्बन्ध में ऐसा नियम है कि अपूर्ण ज्ञान का विकास जिस समय अपना व्यापार करता है, उस समय उसके योग्य बाह्य पदार्थ, अर्थात् इन्द्रियाँ, प्रकाश, ज्ञेयपदार्थ, गुरु, शास्त्र इत्यादि (परद्रव्य) अपने-अपने कारण से ही उपस्थित होते हैं, ज्ञान को उनकी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती। निमित्त-नैमित्तिक का तथा उपादान-निमित्त का ऐसा मेल होता है।

अध्याय १: सूत्र १० - कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - प्रश्न...उत्तर...सम्यग्ज्ञान का फल...

प्रश्न - आप सम्यग्ज्ञान का फल अधिगम कहते हो, किन्तु वह (अधिगम) तो ज्ञान ही है, इसलिए ऐसा मालूम होता है कि सम्यग्ज्ञान का कुछ फल नहीं होता।

उत्तर - सम्यग्ज्ञान का फल आनन्द (सन्तोष), उपेक्षा (राग-द्वेष रहितता) और अज्ञान का नाश है।

(सर्वार्थसिद्धि, पृष्ठ ३३४)

अध्याय १: सूत्र १० - कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - [प्रमाण] ज्ञान की उत्पत्ति स्व से होती है।

इससे यह सिद्ध होता है कि ज्ञान, स्व से ही होता है; परपदार्थ से नहीं होता।

तत्प्रमाणे ।।१०।। - सूत्र की विषयवस्तु

नौवें सूत्र में कथित पाँच सम्यग्ज्ञान ही प्रमाण हैं, उनके अतिरिक्त अन्य मत में भिन्न-भिन्न प्रमाण कहते हैं, किन्तु वह ठीक नहीं है। जिस जीव को सम्यग्ज्ञान हो जाता है, वह सम्यक् मति और सम्यक् श्रुतज्ञान के द्वारा अपने को सम्यक्त्व होने का निर्णय कर सकता है और वह ज्ञान, प्रमाण अर्थात् सच्चा ज्ञान है ।।१०।।

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --	९	१
कौन से ज्ञान प्रमाण है ?	१०	१
परोक्ष एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद	११-१२	२
मतिज्ञान के दूसरे नाम	१३	१
मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त -	१४	१
मतिज्ञान के क्रम के भेद तथा उनका स्वरूप	१५-१९	५
श्रुतज्ञान का वर्णन, उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद	२०	१

जिनवाणी स्तुति